भारत में राजनितिक दलों का विकास

हेबा सिद्दीक़ी (मार्गदर्शक - शानुद्दीन)
एम. ए. तृतीय सेमेस्टर
शंभू दयाल पी . जी . कॉलेज (गाजियाबाद)

सारांश

राजनीतिक और ऐतिहासिक रूप से, भारतीय राजनितिक दलों की जड़ें उपनिवेशी शासन से स्वतंत्रता तक का एक राष्ट्रवादी आन्दोलन है। और बीसवीं सदी की शुरुआत से ही मतदान के अधिकार का क्रमिक विस्तार हुआ। स्वतंत्र भारत के संविधान के तहत मताधिकार की शुरुआत सन् 1950 से हुई। यदि लोकतंत्रीकरण को उस दलीय व्यवस्था का मुख्य कारण माना जाए जो आज हमारे पास है, है तो भारतीय सामाजिक संरचना , जिसमें क्षेत्रीय और बहुसांस्कृतिक तत्व शामिल हैं, और उस संसदीय-संघीय संविधान की प्रकृति जिसके तहत भारतीय लोकतंत्र पिछले सात दशकों से संचालित हो रहा है, वे हस्तक्षेप करने वाले या मध्यवर्ती चर हैं जिन्होंने पार्टी व्यवस्था को आकार दिया है। भारतीय दलीय व्यवस्था के विकास से यह समझ आता है कि लोकतंत्र में राजनीतिक स्थिरता और विविधता का संतुलन बनाए रखना एक निरंतर स्थिर प्रक्रिया है। दलीय व्यवस्था का विकास इस बात को विशेषता देता है कि कोई भी दल या विचारधारा स्थायी नहीं होती बल्कि , सामाजिक, आर्थिक, और क्षेत्रीय परिवर्तनों के साथ राजनीतिक ढांचे की संरचना भी परिवर्तित होती रहती है।

परिचय

साधारण रूप से राजनीतिक दल तीन प्रकार के होते है, जिसमे एकदलीय प्रणाली , द्विदलीय प्रणाली तथा बहुदलीय प्रणाली होती हैं। भारत में बहुदलीय प्रणाली चलती है। भारत में राजनीतिक दलों का विकास और उदय हमारे देश के राजनैतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जि सकी शुरुआत 19 वीं शताब्दी के अंत से मानी जाती है। दलों का निर्माण मुख्यरूप से यह सुनिश्चित करने के लिए कि या जाता है कि देश का नेतृत्व करने के लिए लोगों का एक समूह हो। इसकी आवश्यकता देश के लोगों को अपनी सरकार के बारे में प्रभावी और अधिक विकसित निर्णय लेने के लिए एक विशेष निर्णय लेने के लिए जागरूक करना है। मुख्य रूप से देश की सामाजिक,आर्थिक परिस्थितियों तथा स्वतंत्रता आंदोलनों और भारतीय नागरिकों में बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना के कारणवश हुआ। भारत में राजनैतिक दलों का उदय और उनका विकास भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का अभिन्न अंग है। ये दल न केवल सरकार बनाने और चलाने का कार्य करते हैं, बल्कि जनता की अपेक्षाओं और विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। भारत में राजनीतिक दलों की शुरुआत औपनिवेशिक भारत में हुई, जब स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई समूहों ने संगठित रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाई। भारत में राजनीतिक दलों का विकास देश के लोकतांत्रिक ढांचे की जड़े है, जो समाज की विविधता , विचारधाराओं और क्षेत्रों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन दलों का उदय और उनका विस्तार एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है, जो औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता संग्राम, और स्वतंत्रता के बाद के दौर में अलग-अलग रूपों में प्रकट हुआ। भारत में सबसे पहला गठित राजनीतिक दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) 1885 में गठित किया गया था , जिसने प्रारंभिक वर्षों में ब्रिटिश शासन में भारतीयों के अधिकारों की मांग की और बाद में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व भी किया । इसके अलावा , 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और कम्युनिस्ट पार्टी जैसे कई अन्य दल भी उभरे, जो विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

भारतीय राजनीतिक दलों के विकास के अध्ययन के उद्देश्य

यह अध्ययन भारतीय राजनीतिक दलों के विकास का विश्लेषण करने के लिए किया गया है। इसके अध्ययन के मुख्य उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं से भली भांति समझा जा सकता है।

- भारतीय राजनीतिक दलों के विकास के इतिहास का अध्ययन करना और भारतीय पार्टी प्रणाली की उत्पत्ति कैसे हुई, का अध्ययन करना।
- भारतीय राजनितिक दलों की वृद्धि और विकास पर अध्ययन करना।
- भारतीय राजनितिक दलों के विभिन्न चरणों पर ध्यान केंद्रित करना।
- राष्ट्रीय स्तर पर भारत की बहुदलीय प्रणाली के विस्तार, विकास,और उदय पर अध्ययन करना।
- भारत में राजनीतिक दलों का विकास कैसे हुआ अध्ययन करना।

भारत में राजनीतिक दलों का ऐतिहासिक विकास

भारत में औपनिवेशिक काल, 1757 से 1947 तक, एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवधि है जिसमें भारतीय राजनीति , समाज, और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इस समय का ज्यादातर भाग ब्रिटिश राज के अधीन ही था , जिसने भारतीय समाज में कई परिवर्तन किए। इस काल में ही राजनीतिक दलों के विकास की शुरुआत देखी जा सकती है। सन् 1757 में प्लासी की लड़ाई में बंगाल में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की विजय के साथ ही इस औपनिवेशिक काल का आरंभ हुआ। युद्ध में जितने के बाद , कंपनी ने धीरे-धीरे भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण प्राप्त करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार सन् 1857 में होना शुरू हुआ था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिश सरकार ने कंपनी के शासन को समाप्त कर भारत को सीधे अपने शासन में ले लिया था । इससे ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारतीय राजनीति में बहुत बदलाव आए और राजनीतिक जागरूकता का उदय हुआ। 19 वीं सदी के मध्य में, औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनता की जागरूकता काफ़ी बढ़ने लगी तथा समाज में नए विचार, जैसे स्वदेशी आंदोलन, सामाजिक सुधार और शिक्षा के प्रसार ने भारतीयों में राजनीतिक चेतना का प्रभा बढ़ाया। राजा राम मोहन रॉय, स्वामी दयानंद सरस्वती , और आचार्य विनोबा भावे जैसे सामाजिक सुधारकों ने भारतीय समाज के भीतर सुधार की दिशा में कार्य किया , जिससे राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई। और फिर भारत की पहली राजनितिक दल प्रणाली का उद्भव हुआ। (प्रथम राजनितिक दल कांग्रेस का गठन 1885 में हुआ।) इस प्रथम राजनितिक दल का सर्वप्रथम उद्देश्य था कि भारतीयों को ब्रिटिश शासन में ज़्यादा राजनीतिक भूमिका मिलनी चाहिए। दूसरे विभिन्न दलों की शुरुआती दौर में, कांग्रेस का स्वरूप एक किस्म के मंच जैसा था , जहां विभिन्न वर्गों के तथा क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने ब्रिटिश शासन के साथ संवाद करने का प्रयास किया और नीतियों में सुधार की मांग की। महात्मा गांधी के सामने उनके समय में उनके नेतृत्व से कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा देने का भरसक प्रयास किया। सत्याग्रह और असहमति के आंदोलनों ने भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक साथ किया था। इस सब के दौरान सन् 1906 में मुस्लिम लीग की भी स्थापना हुई, जिसमे मुस्लिम समुदायों के अधिकारों और हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी सामाजिक मांगो पर ध्यान केंद्रित किया गया था। यह बाद में पाकिस्तान की मांग का आधार भी बना। जो आगे चलकर भारत- पाकिस्तान बंटवारे का कारण बना था। सन् 1919 में ब्रिटिश शासन द्वारा रॉलेट एक्ट लाया गया । जिसका विरोध खूब जमकर हुआ तथा रॉलेट एक्ट और 1930 का नमक सत्याग्रह जैसे आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ देने का कार्य भी किया। रॉलेट एक्ट को बाद में काला कानून कहकर भी पुकारा जाने लगा था। कांग्रेस ने इस एक्ट के विरुद्ध विशाल आंदोलन होने के बाद फिर पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करना शुरू किया था। इसके बाद हिंदू महासभा के दल का भी गठन हुआ। इसको हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए तथा इसकी रक्षा करने के लिए स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य था कि हिंदू संस्कृति और पहचान को

और सशक्त बनाया जाए। फिर सन् 1925 में कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना हुई, जिसने समाजवादी और श्रमिक वर्ग के अधिकारों की वकालत की थी। यह दल स्वतंत्रता संग्राम में भी बहुत सक्रिय रहा। इस काल में कई अन्य दलों का भी गठन हुआ, जैसे कि अकाली दल, शिवसेना , और विभिन्न क्षेत्रीय दलों ने भी अपनी पहचान बनाई थी। सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया था , जिसका कारण भारतीयों में असंतोष की भावना बढ़ी। सन् 1942 में हुए क्ट इंडिया आंदोलन के कारण स्वतंत्रता की मांग और भी तेज हो गई थी । 1947 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दबाव के कारण, अंत में ब्रिटिश सरकार से 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। तथा भारत का एक नया रूप उभर कर आया और नए प्रजातंत्र का उद्भव हुआ। तथा भारत का अपना नया संविधान लागू हुआ।

1947 से 1990 तक के विकास का दौर

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद, 1947 से 1990 तक का दौर भारतीय राजनीति के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण और परिवर्तनशील रहा है। इस अवधि के दौरान भारतीय राजनीतिक दलों का विकास कई उतार-चढ़ावों से गुजरा था । प्रारंभिक वर्षों में तो कांग्रेस का वर्चस्व रहा , लेकिन धीरे-धीरे अन्य विपक्षी दलों का उभार, क्षेत्रीय दलों का विकास और समाज में हो रहे परिवर्तनों के कारण भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रणाली का रूप उभरने लगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) भारत का सबसे प्रभावशाली राजनीतिक दल था। इसका नेतृत्व जवाहरलाल नेहरू जी ने किया था , जिन्होंने देश के पहले प्रधानमंत्री के रूप में सन् 1947 से 1964 तक भारत का नेतृत्व भी किया था। कांग्रेस ने भारतीय राजनीति में विकास, समाजवाद, और धर्मनिरपेक्षता की नीति को अपनाया था। इस दौरान देश के पुनर्निर्माण, योजना बद्ध विकास, और लोकतांत्रिक संस्थानों की स्थापना पर विशेष ध्यान दिया गया था। इस समय, कई विपक्षी दलों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा ई, जिनका उद्देश्य कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती देना रहा। स्वतंत्रता मिलने के बाद, भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय शुरू हुआ। इस दौर में कई राजनीतिक दलों का उदय, विकास और उनके बीच सत्ता के संघर्ष देखने को मिले। वर्ष 1947 से 1990 तक का खंड भारतीय राजनीति में एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्वतंत्र बदलाव का समय था , जिसमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों ने अपनी पहचान स्थापित की थी। सन् 1947 के बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत की राजनीति में प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, कांग्रेस ने शुरुआती वर्षों में देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों को आकार दिया था। सन् 1950 और 1960 के दशक में कांग्रेस ने सन् 1952, 1957 और 1962 के आम चुनावों में भारी जीत हासिल की। इसने देश को एक स्थिर प्रशासन और लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव प्रदान की। नेहरू जी की समाजवादी नीतियों और औद्योगिक विकास की योजनाओं ने कांग्रेस के वर्चस्व को बनाए रखा। सन् 1960 के दशक के अंत में, नेहरू जी की मृत्यु और लाल बहादुर शास्त्री जी के निधन के बाद, इंदिरा गांधी जी ने पार्टी की कमान संभाली थी । सन् 1969 में, कांग्रेस का विभाजन हुआ और पार्टी दो गुटों में बंट गई- कांग्रेस (O) (ओल्ड कांग्रेस) और कांग्रेस (R) (इंदिरा कांग्रेस)। इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस (R) ने 1971 में चुनाव जीता और यह प्रमुख गुट बन गई। इंदिरा गांधी जी ने 1975 में आपातकाल की घोषणा की , जिससे कांग्रेस की लोकप्रियता में गिरावट आई और 1977 में पहली बार उन्हें चुनावों में हार का सामना करना पड़ा । सन् 1980 में इंदिरा गांधी की वापसी हुई, लेकिन सन् 1984 में उनकी हत्या के बाद, राजीव गांधी जी ने पार्टी का नेतृत्व संभाला था । सन् 1984 के चुनावों में कांग्रेस ने भारी बहुमत से जीत हासिल की , लेकिन सन् 1989 के चुनावों में इन्हे फिर हार का सामना करना पड़ा। इस दौरान भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। जिसे वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के नाम से जाना जाता है। भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा की गई। यह पार्टी मुख्य रूप से हिंदू राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की

विचारधारा का प्रचार करती थी। जनसंघ ने सन् 1950 और 1960 के दशकों में धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। यह कांग्रेस के वर्चस्व के खिलाफ एक सशक्त विकल्प बनकर उभर रहा था , विशेषकर उत्तर भारत में। 1975 के आपातकाल के बाद, जनसंघ ने अन्य विपक्षी दलों के साथ मिलकर सन् 1977 में जनता पार्टी का गठन किया और इंदिरा गांधी को हरा कर सत्ता में आई। हालांकि , वर्ष 1980 में आंतरिक मतभेदों के कारण जनता पार्टी बिखर गई और जनसंघ के नेताओं ने भारती जनता पार्टी (BJP) का गठन किया। भारतीय जनता पार्टी ने अटल बिहारी बाजपेई और लालकृष्ण आडवाणी जी के ध्यान में पार्टी को पुनर्गठित किया था। सन् 1980 के दशक के अंत में राम मंदिर के आंदोलन के दौरान दल की लोकप्रियता बहुत बढ़ी , जिस वजह से इसे एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में माना गया। 1980 के दशक के अंत में राम मंदिर आंदोलन के दौरान पार्टी की लोकप्रियता बढ़ी , जिसने इसे एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। सन् 1984 में कांशी राम ने बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की स्थापना की। यह दल मुख्य रूप से तथा पूर्णरूप से दलितों , पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए संघर्षरत रहा। इसका उत्तर प्रदेश में बहुत प्रभाव हुआ। बीएसपी ने उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक मजबूत दलित नेता के रूप में अपनी पहचान बना ई थी और वर्ष 1990 के दशक में कई बार राज्य की सत्ता में रही थी। सन् 1990 के बाद का भारतीय राजनीतिक दलों का दौर अत्यधिकपरिवर्तनशील और विकासशील रहा है। इस समयावधि में भारतीय राजनीति में एक प्रमुख बदलाव देखा गया था , जिसमें बहुदलीय प्रणाली , गठबंधन की राजनीति , और क्षेत्रीय दलों का उभार भी मुख्य रूप से केंद्र या कह सकते है कि शक्ति में रहे। इसी दौरान कई नए राजनीतिक दल अस्तित्व में आए, और पारंपरिक दलों ने भी अपनी विचारधारा , रणनीतियों और गठबंधनों में बदलाव भी किए। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) वर्ष 1980 में भारतीय जनसंघ के उत्तराधिकारी के रूप में उभरी थी , लेकिन सन् 1990 के बाद इसका राजनीतिक प्रभाव तेजी से ऊपर की और बढ़ रहा था।

1990 से लेकर वर्तमान तक का विकास

सन् 1998 में अटल बिहारी बाजपेई जी के नेतृत्व में ही बीजेपी द्वारा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन डी ए) का गठन किया गया था। सन् 1998 में, BJP ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेतृत्व में केंद्र में पहली बार एक स्थिर सरकार बनाई थी। इस गठबंधन में BJP के साथ 23 छोटे-बड़े सभी प्रकार के दल शामिल थे।अटल बिहारी बाजपेई जी के ही नेतृत्व में एनडीए ने सन् 1999 के आम चुनावों में फिर दोबारा जीत हासिल कर ली थी , जिस वजह से यह पहली गैर कांग्रेसी गठबंधन की सरकार बनी थी जिसने अपना पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा कर लिया था। इसी दौरान देश में सरकार की कुछ नीतियों ने आर्थिक सुधारों ,संचार (टेलीकॉम) सेक्टर में उदारीकरण, और परमाणु परीक्षण (पोखरण II) जैसे प्रमुख देश की राजनीति और अंतर्राष्ट्रीयस्थिति में बहुत परिवर्तन किया था । फिर इसके बाद सन् 2004 के आम चुनावों में, "इंडिया शाइनिंग" नामक अभियान के चलने के बावजूद भी बीजेपी को काफी हार का सामना करना पड़ा था। इस वजह से ही कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए गठबंधन सत्ता में आ गया था। और सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनी थी , लेकिन सोनिया गांधी जी ने प्रधानमंत्री बनने से इनकार कर दिया था । फिर इस वजह से डॉ . मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री पद के लिए चुना गया था। यह हार भाजपा के लिए एक बहुत बड़ा झटका थी और इस हार के बाद पार्टी को संगठनात्मक पुनर्गठन की आवश्यकता पड़ी । सन् 2004 से 2011 की अवधि में बीजेपी मजबूत विपक्षी दल के रूप में उभरी और कांग्रेस की यूपीए सरकार को कई मुद्दों पर घेरने की कोशिश की , जैसे भ्रष्टाचार के आरोप (2G स्पेक्ट्रम घोटाला , कॉमनवेल्थ घोटाला) और आर्थिक नीतियों की आलोचना । सन् 2009 के आम चुनावों में भी BJP हार गई, लेकिन इसके बाद पार्टी ने संगठनात्मक सुधार और नए नेतृत्व के साथ आगे बढ़ने की रणनीति अपनाई। सपा ने 2004-2007 तक उत्तर प्रदेश में सरकार चलाई। मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में पार्टी ने अपने जातीय और सामाजिक समीकरणों के आधार पर राज्य में एक मजबूत वोट बैंक बनाए रखा। सपा ने दलित और

अन्य पिछड़े वर्गों के समर्थन को एकत्रित करते हुए राज्य की राजनीति में अपनी स्थिति मजबूत की। सन् 2007 के इन चुनावों में सपा से हारने के बाद, पार्टी ने अपनी रणनीति में बदलाव किया और युवा नेतृत्व को सामने लाने की कोशिश की, जिसमें अखिलेश यादव का उदय हुआ। इस अवधि में उत्तर प्रदेश की राजनीति में बसपा ने भी प्रमुख स्थान हासिल किया था। दूसरे शब्दों में सन् 2007 में, मायावती ने यूपी में पूर्ण बहुमत से सरकार बनाई, जो उनके राजनीतिक करियर का महत्वपूर्ण मोड़ था। सन् 2004 में, वामपंथी दलों ने यूपी सरकार को समर्थन दिया, लेकिन 2008 में परमाणु समझौते के मुद्दे पर उन्होंने समर्थन वापस ले लिया। सन् 2006 में, सीपीएम ने पश्चिम बंगाल और केरल में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन सन् 2011 तक पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस के उभार के कारण उनकी स्थिति कमजोर हो गई। सन् 2011 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में, तृणमूल कांग्रेस ने संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) का हिस्सा रहते हुए कांग्रेस और कुछ अन्य छोटे दलों के साथ गठबंधन किया। इस चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने 294 विधानसभा सीटों में से 184 सीटें जीतीं, जबकि गठबंधन के अन्य दलों (मुख्य रूप से कांग्रेस) ने 42 सीटें हासिल कीं। वाम मोर्चा, जिसका नेतृत्व भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (CPI-M) कर रही थी, को केवल 62 सीटों पर संतोष करना पड़ा, जो उनके तीन दशकों से अधिक के शासन का सबसे बुरा प्रदर्शन था। 2011 में ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में वामपंथी सरकार को हरा कर राज्य की राजनीति में एक नया अध्याय शुरू किया। टीएमसी का उभार वाम दलों के लिए एक बड़ा झटका था, और इसने पश्चिम बंगाल की राजनीति को पूरी तरह बदल दिया। ममता बनर्जी ने खुद को किसानों और गरीबों की मसीहा के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने नंदी ग्राम और सिंगूर में भूमि अधिग्रहण के खिलाफ लंबे समय तक आंदोलन किया और गरीबों, आदिवासियों, और छोटे किसानों के अधिकारों की बात की। उनका नारा, "मां, माटी, मानुष" (मां, जमीन, और लोग), लोगों के दिलों में घर कर गया और वामपंथी इसी नारे ने सरकार की नीतियों के खिलाफ जनमत तैयार करने में मदद की। फिर सन् 2012 में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में उनके हाथों से आम आदमी पार्टी का गठन हुआ। यह पार्टी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से उभरी हुई थी और इस दल ने जल्द ही शहरी मध्यम वर्ग और युवाओं का समर्थन प्राप्त करने में सफलता हासिल की। वर्ष 2013 के विधानसभा चुनावों में, आप सरकार ने दिल्ली में सरकार बनाई। सन् 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में आप सरकार ने भारी बहुमत हासिल कर दिल्ली में अपनी स्थिति पूरी तरह मजबूत कर ली थी। हाल ही के वर्षों में, आप सरकार ने पंजाब में भी सरकार बनाई और ये अन्य राज्यों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का लगातार प्रयास कर रही है, जिससे यह एक नई उभरती हुई राष्ट्रीय पार्टी के रूप में दिखने लगी है। सन् 2015 से 2020 के बीच, आप ने राष्ट्रीय स्तर पर भी अपने पैर जमाने की कोशिश की थी। आप की इस पार्टी ने कई राज्यों, जैसे पंजाब, गोवा, गुजरात, और उत्तर प्रदेश में चुनाव भी लड़ा था, लेकिन उनको ज्यादा सफलता हासिल नहीं हुई थी। सन् 2017 के पंजाब विधानसभा चुनाव में, AAP ने 20 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी पार्टी तो बनी थी, लेकिन सरकार बनाने में यहां आप की सरकार नाकामयाब रही थी। अरविंद केजरीवाल जी की दिल्ली से बाहर पार्टी का विस्तार करने की रणनीति को कई बार आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा था, खासतौर पर वर्ष 2017 के बाद के समय में। सन् 2022 में, आप ने पंजाब के विधानसभा चुनाव में अप्रत्याशित सफलता हासिल की और 117 सीटों में से 92 सीटें जीतकर सरकार बनाई थी। श्री भगवंत मान ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। यह जीत AAP के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, क्योंकि इसने पार्टी को । दिल्ली के बा हर एक पूर्ण रा ज्य में सरकार बनाने का अवसर दिया था और राष्ट्रीय राजनीति में पार्टी की स्थिति को मजबूत भी किया था।यदि वर्तमान की बात करें तो वर्तमान में, आप सरकार दिल्ली और पंजाब में सत्ता रूढ़ दल हैं और अपने राजनीतिक मॉडल को अन्य राज्यों में भी लागू करने का प्रयास कर रही हैं। इस पार्टी ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने और सन 2024 के लोकसभा चुनावों में बड़ी भूमिका निभाने की योजना बनाई है। आप पार्टी का मुख्य ध्यान केंद्र भ्रष्टाचार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुशासन के एजेंडे पर है। पार्टी की रणनीति क्षेत्रीय दलों के बीच खुद को एक मजबूत विकल्प के रूप में प्रस्तुत करना है और राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस और बीजेपी के जैसे विकल्प के रूप में उभरना है।

राजनीतिक दलों के प्रकार

राजनीतिक दलों की प्राणाली या राजनीतिक दलों के निम्नलिखित तीन प्रकार होते हैं:

- एक दलीय प्राणाली: जो सोवियत यूनियन, चीन और वियतनाम आदि देशों में प्रचलित है।
- द्वि-दलीय प्राणाली: जो अमेरिका, कनाडा, बहामास, जमैका और जिम्बाब्वे आदि देशों में प्रचलित है।
- बहुदलीय प्राणाली: ये प्राणाली जर्मनी, आइसलैंड, भारत, इंडोनेशिया, आयरलैंड, इज़राइल, इटली आदि बहुत देशों में प्रचलित है।

भारत में राजनीतिक दलों की चुनौतियाँ

भारतीय राजनीतिक दलों की कुछ मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

- भारतीय राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र का न होना भी एक गंभीर समस्या है। ज्यादातर दल वंशानुगत राजनीतिक दलों पर निर्भर हैं, जहां राजनीतिक परिवारों के सदस्यों को ही राजनीति में आगे कदम रखने की अनुमति मिलती है। यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बिल्कुल विपरीत है तथा बिल्कुल विरुद्ध है, जिससे नए दलों को उभरने का मौका नहीं मिल पाता। इससे कई राजनीतिक परिवारों के वंशज ही राजनीति में आते हैं। तथा नए कार्यकर्ताओं को सेवा का मौका इस वजह से नहीं मिल पाता और ये लोकतंत्र के लिए भी एक चुनौती या समस्या बन जाता है। इससे जनता को कम विकल्प मिलते हैं।
- दूसरी मुख्य चुनौती भ्रष्टाचार को भी कह सकते हैं, हमारे भारत में चुनावों में लड़ने के लिए बहुत ही भारी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है जिससे पूरा चुनावी खर्च का एक बड़ा हिस्सा पार्टी के उम्मीदवारों, कार्यकर्ताओं और निजी योगदानकर्ताओं से आता है, जिनमें उद्योगपति और कारोबारी भी शामिल होते हैं। इसका यह दुष्परिणाम होता है कि ये योगदानकर्ता या उद्योगपति चुनाव जीतने के बाद पार्टी पर आंतरिक तौर पर नीतिगत दबाव बनाते हैं। इसके अलावा, चुनाव आयोग द्वारा नियमानुसार उम्मीदवारों को जो चुनावी खर्च को लेकर जो नियम बना कर दिए हैं उनका सही से पालन नहीं होता है और दलों के उम्मीदवार भी अक्सर इन नियमों का उल्लंघन करते हैं, जिससे भ्रष्टाचार की समस्याएँ बहुत हद तक बढ़ जाती हैं।
- तीसरी मुख्य चुनौती धर्म और जाति संबंधित है। राजनीतिक दल जब उम्मीदवार का चयन करते हैं तो वह अक्सर उम्मीदवार का चयन धर्म व जाति के आधार पर करते हैं। जिससे कि उपस्थित जाति व धर्म के लोगों का भरोसा जीता जा सके और सरकार आसानी से बनाई जा सके। इसके दुष्परिणामों से लोगों में जातिगत और धार्मिक विभाजन की स्थिति पैदा हो जाती है तथा इससे नफरत को जगह मिलती है। और नेता अपने धर्म को मान्यता देता है और अपने ही धर्म व जाति के लोगों को प्राथमिकता देते हुए उन्हीं को महत्ता देता है। जिससे लोगों में हमेशा असंतोष की भावना बढ़ जाती है। और नेता अपने धर्म व जाति के अलावा अपने रिश्तेदार आदि को भी लाभ पहुँचाने का प्रयास करते हैं, जिससे कि समाज में भ्रष्टाचार और अपराध को भी बढ़ता हुआ देखा जा सकता है।
- चौथी मुख्य चुनौती हम कम युवा रणनीति को भी कह सकते हैं। हमारे भारत में राजनीतिक दलों में युवा भागीदारी व नई युवा सोच का बहुत अभाव है तथा युवा रणनीति की सोच बहुत ही सीमित और संकुचित है। ज्यादातर वरिष्ठ नेताओं की भागीदारी के कारण युवा नेताओं को उभरने का मौका नहीं मिलता है तथा इस वजह से नई विचारधाराओं को भी उभरने का मौका नहीं मिल पाता है। और ये भी एक बड़ी चुनौती बनकर राजनीतिक क्षेत्र को सीमित बना देती है।
- पांचवीं मुख्य चुनौती में हम सोशल मीडिया और न्यूज चैनलों को शामिल कर सकते हैं। न्यूज़ चैनलों का देश में एक बहुत बड़ी भूमिका होती है क्योंकि यह न्यूज चैनल का फी होता है लोगों के

मस्तिष्कों पर प्रभाव डालने के लिए। लोगों की रा य बदलने के लिए। इसी लिए ज्यादा तर हमारे भारत में राजनेता सोशल मीडिया का दुरुपयोग करते हैं लोगों को प्रभावित करने के लिए। और इसके बहुत दुष्प्रभाव पड़ते हैं देश की स्थिरता पर। ये दूसरे विभिन्न दलों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बनकर उभरती है।

- भारतीय राजनीतिक दलों की नीतियों के निर्धारण को भी एक अन्य मुख्य चुनौती के रूप में देखा जा सकता है। भारत में राजनेता नीतियों का निर्धारण धार्मिक और जातिगत आधारों पर करते हैं जिससे भी नफरत एक प्रभाव तो बढ़ता है ही साथ में अस्थिरता भी देखने को मिलती है। दूसरी जाति के लोगों में अन्य जाति या धर्म के लोगों के लिए नफरत की भावना बढ़ जाती है जिससे कि देश की स्थिरता असंतुलित और अस्तव्यस्त हो जाती है। और इस वजह से दंगे-फसाद बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है तथा देश में सुरक्षा संबंधी समस्या उत्पन्न हो जाती है वर्तमान में इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं।

निष्कर्ष

भारत में राजनीतिक दलों का ऐतिहासिक विकास स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक एक जटिल और परिवर्तनशील प्रक्रिया रही है। यह विकास न केवल राजनीतिक पार्टियों के उदय का प्रमाण है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता, संस्कृति, और विचारधाराओं की गहराई को भी दर्शाता है। राजनीतिक दलों की यह यात्रा भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और विविधता के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में राजनीतिक दलों का विकास समाज की जटिलताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप है। ये दल लोकतांत्रिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और देश की राजनीति को सशक्त और विविध बनाते हैं। उनके उद्देश्यों के माध्यम से, भारत में एक मजबूत और सक्रिय लोकतंत्र की नींव रखी जा रही है। सन् 1990 के बाद से भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रणाली का विकास हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय दलों (जैसे बीजेपी, कांग्रेस) और प्रमुख क्षेत्रीय दलों (जैसे TMC, AAP, SP, BSP) ने अपनी-अपनी विचारधाराओं और रणनीतियों के अनुसार भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी है। गठबंधन की राजनीति, क्षेत्रीय मुद्दों का उभार और नए दलों का निर्माण, भारतीय लोकतंत्र की विविधता और जटिलता को दर्शाता है।

संदर्भ

1. डॉ. मुजम्मिल हक़, सुकान्ता घोष, "इवोल्यूशन ऑफ पॉलिटिकल पार्टीज़ इन इंडिया", जनवरी 2022, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल सायंस इन्वेंशन्स (IJHSSI), वॉल. 11, पीपी. 31-36
2. एल. एच. छुआना वर्मा, "इवोल्यूशन ऑफ पॉलिटिकल पार्टी सिस्टम इन इंडिया", जून 2020, मिजोरम यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज, वॉल. 4थ
3. सत्येंद्र कुमार, "भारत का दलीय इतिहास: एक परिचय", 2018, हडिन्या पी.जी. कॉलेज हडिन्या इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), पीपी. 201-202
4. राजीव धवन, “लोकतंत्र और भारतीय राजनीति”, 2018, इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 53, पी पी. 153-162
5. प्रदीप के. छिब्बर, “इंडियाज पॉलिटिकल पार्टीज”, 2014, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, एड. 1st, पी पी. 45-59

वेबसाइट्स

6. https://India.gov.in
7. https://egyankosh.ac.in/

8. https://www.insightsonindia.com/
9. https://sajaipuriacollege.ac.in
10. https://india.hss.de
11. https://ebooks.inflibnet.ac.in